Vol 3 Issue 2 March 2013

Impact Factor : 0.2105

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 3, Issue. 2,March. 2013
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

नागार्जून की कविता में यथार्थ–बोध

शेख शहेनाज अहेमद

हिंदी विभागाध्यक्ष
हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,
हिमायतनगर, ता. हिमायतनगर, जि. नांदेड

सारांशः

समकालीन कविता में बहुमुखी प्रतिभा के धनी रचनाकारों मे जिन लोगों का नाम लिया जाता है, उनमें सर्वप्रथम नागार्जून जैसे महान कवि का नाम हमारे सामने आता है । हिंदी के जनवादी तथा यथार्थ–बोध का चित्रण करनेवाले वे एक ऐसे कवि है, जो सामान्यतः सभी को अपने से लगते हैं । नागार्जून एक ऐसे कवि हैं, जिनकी कविताओं को सर्व–सामान्य, जनता सहजता से आत्मसात करते हुए उसे स्वीकार करती है, तभी उस कवि को सर्वसामान्य और और सर्वहारा वर्ग का कवि कहना सही लगता है । और इसी कारण उनकी संपूर्ण कविताओं में सर्वहारा वर्ग का यथार्थ–बोध झलकता है । और यहॉ यह कवि जनवादी तथा सर्वहारा के साथ–साथ यथार्थवादी भी उतना ही लगता है ।

प्रस्तावना :–

नागार्जून का संपूर्ण साहित्य इस देश की सर्व–सामान्य, गरीब जनता के स्वप्न और जीवन संघर्ष की गाथा है, जिसमें यथार्थ स्पष्ट रुप में दिखाई देता है । नागार्जून की दृष्टि देश के भीतर घट रही समस्त सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों पर टिकी हुई है । उनके साहित्य में मानव के यथार्थ जीवन की सभी घटनाओं का चित्रण होता है, जिसका संबंध आम आदमी से है । नागार्जुन ने जो देखा, अनुभव किया उसे ही चित्रित किया । वस्तुस्थिती का यथार्थ चित्र खडा करने में नागार्जुन को महारत हासिल है । इस संदर्भ में नरेंद्र सिंह का यह कथन उपयुक्त लगता है– '' जनवादी कविता से हमारा तात्पर्य उस कविता से है जो जनता के मानसिक परिष्कार, उनके आदर्श और मनोरंजन से लेकर क्रांति की तरफ मोडनेवाला प्राकृतिक शोभा और प्रेम, शोषक और सत्ता के घमंड को चूर करनेवाला, स्वतंत्रता और मुक्तिगीतों को अभिव्यक्ति देनेवाला, यह सभी कोटियॉ जनवादी काव्य की हो सकती है, बशर्ते वह मन को, मानवीय जन को व्यापक बना सके ।''[1] इसलिए उनकी कविताओं में हमारे देश की शोषित, पीडित और मेहनतकश भारतीय जनता के जीवन का जीता जागता चित्र देखने को मिलता है । नागार्जुन एक ऐसे कवि है, जो इस देश की सर्वसामान्य जनता की तरह सोचते हैं और समझते हैं । जनता के प्रति यही चेतना उन्हें काव्य रचने के लिए प्रेरित करती हैं । सफेद पोशाख। धारण कर जनता को आश्वासन देनेवाले राजनीतिक नेताओं पर व्यंग का रुप एकदम करारा लगता है । जिससे हमारे देश का राजनीतिक यथार्थ का सही बोध नजर आता है । राजनीतिक यथार्थ बोध को चित्रित करनेवाली पंक्तियों से नेता लोगो को भंडाफोड कवि इस प्रकार करता है–

'' श्वेत–श्याम–रतनार ऑखिया निहार के
सिंडकोटी प्रभुओं की पग धूर झार के
लौटे हैं दिल्ली से कुल टिकट भार के
खिले है दांत ज्यों दाने अनार के
आए दिन बहार के ।। ''[2]

सर्वहारा वर्ग की चेतना नागार्जुन की कविताओं का मूल आधार है । इसी चेतना के माध्यम से कवि ने आर्थिक समस्याओं और जीवनमूल्यों के प्रश्नों को उठाया है । समाज में स्थित मूल्यों से दूर यथार्थ स्थितियों को चित्रित कर नागार्जुन ने मानव मुक्ति की सही सापेक्ष दृश्टि प्रतिष्ठित की है । नागार्जुन ने कविताओं में मानवीय जीवन की असंतियों और सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए जीवन मूल्यों की युगानुरुप अभिव्यक्ति की है । शोषित और पीडित समाज के राजनीतिक और सामाजिक यथार्थ को इस कवि ने व्यंग्यात्मकता में चित्रित किया है । इस संदर्भ में डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने बिलकुल सही कहा– '' नागार्जुन अपनी कविता में दल के साथ तो नहीं मगर जन के साथ बराबर बंधे रहे हैं । लोक जीवन और लोक मन को जितनी आत्मियता से नागार्जुन ने व्यक्त किया, किसी दूसरे आधुनिक कवि ने नही ।''[3]

नागार्जुन की आरंभिक रचनाओंसे लेकर अंत तक की रचनाओं को जब हम पढते है तो उसमें एक ही स्वर दिखाई देता है, समय का यथार्थ । इस यथार्थ जे जुडा हुआ यह कवि जीवन को सभी स्थितियों को अपनी गहरी दृष्टि से देखता है । उनकी अभिव्यक्ति एक सच्चे और ईमानदार व्यक्ति की अभिव्यक्ति है । उनकी कविता ओं में मार्क्सवादी विचारधारा भी देखने को मिलती है । उनकी कविताओं में यह विचारधारा मानवीय प्रतिबध्दता के कारण आयी है । नागार्जुन में जो साम्यवादी चेतना है उसमे विश्व कल्याण की भावना है । उसमें संदेह नही कि उनकी प्रारंभिक कविताऍं रागात्मक रही और उनमें रागबोध यथार्थबोध से जुडता गया और उन्होंने अन्याय, अत्याचार और शोषण के विरुध्द अपनी आवाज बुलंद की । इसी आवाज को बुलंद करते हुए उन्होंने मजदूरों की यथार्थ स्थिती का चित्रण किया है, वह इस प्रकार है –

Title : *नागार्जून की कविता में यथार्थ–बोध*
Source:Indian Streams Research Journal [2230-7850] *शेख शहेनाज अहेमद* **yr:2013 vol:3 iss:2**

'' दे रहे थे गति । रबड विहीन ठूँठ पैडलों को । चला रहे थे ।
एक नहीं, दोन नहीं, तीन–तीन चक्र । कर रहे थे मात
त्रिविक्रम वामन के पैरों को । नाप रहे थे धरती का अनहद
फासला घंटो के हिसाब से ढोये जा रहे थे ।''[4]

उपर्युक्त काव्य पंक्तियों को पढने से स्पष्ट होता है कि, कवि किस तरह से एक गरीब रिक्शा चलानेवाले मजदूर का यथार्थ चित्र कितनी गहरी आस्था से व्यक्त कर रहा है । नागार्जुन जीवन भर विसंगतियों से पूर्ण स्थितियों के साथ संघर्ष करते रहे । जिन अभावों को उन्होंने भोगा, महसूल किया उसका सजीव चित्र हमारे सामने कविता के माध्यम से उपस्थित किया है । कई बार लोगों ने उन्हे एक फटी पुरानी दरी को रस्सी से बांधकर कंधे पर लटकाकर सडकों पर गजरते हुए देखा है । यह कवि जब रास्ते से गुजरते हुए गंगा की धारा को बहते हुए देखता है, जिसमें मल्लाहों के नंगधडंग लडके गंगा में फेंके गऐ पैसों को निकालने के लिए डुबीयाँ मारते है, तब कवि कहता है –

'' बीडी पिएँगे–आम चूसेंगे–कि मलेंगे देह में
सबुन की सुगंधित टिकिया । लगाएँगे सर में चमेली का तेल ।
या कि हम उम्र छोकरी को टिकली ला देंगे
पसंद करे शायद व मगही पानका एकही बिडा
देखना ओ गंगा मैय्या ।''[5]

इन पंक्तियों को पढते–पढते समूचा चित्र ही हमारे सामने आता है । सच में नागार्जुन शब्द के चित्रकार हैं जो शब्द के माध्यम से कविता रुप में अभाव में जीनेवाला इस देश का मध्यमवर्गीय युवक वर्ग अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत कर रहा है, इन स्थितियों का अत्याधिक संवेदनशील चित्रण कवि ने इस प्रकार किया है –

''माँ–बाप गरीब, न कर सकते प्रतिकार बहरापन का
सोंचा होगा, पकडा देंगे कोई पथ जीवन यापन का
बन सकती है वह चित्रकार, ले सकती है नाच सीख
जिससे न पडे किसी पर भार, जिससे न मांगनी पडे भीख । ''[6]

यह चित्रण कल्पना मात्र नहीं है, स्वयं कवि इस प्रकार की विषम स्थितियों में रहा है । कवि ने गरीबी और अभाव के मार के साथ–साथ पूँजीवादी समाज द्वारा दी गई अपमान जनक स्थितियों का मुकाबला किया है । जो कुछ भी उन्हें मिला उसी में अपना जीवन–यापन करते रहे किसी के सामने हाथ नही फैलाये । देश का भविष्य बनानेवाले शिक्षक वर्ग की स्थिती इस देश में कितनी दयनीय हो चुकी है इसका यथार्थ चित्रण उनकी कविता प्रेत का बयान में मिलता है । जहाँ कवि कहता है –

'' ओ रे प्रेत कडक कर के बोले नरक के मालिक यमराज
सच–सच बतला कैसे मरा तू ?भूख से, अकाल से ?
सुनिए महाराज । तनिक भी पीर नही, दुख नही,
दुविधा नहीं सरलतापूर्वक निकले थे प्राण
सहन न कर सकी आंत जब पेचिस का हमला ।''[7]

नागार्जुन की कविताओं में ऐसे एक नही अनेक चित्र देखे जा सकते है । इस देश के जननायकों की जनता के साथ की हुई धोखाधडी को कवि ने अपनी कविताओं में स्पष्ट किया है । देश के नेताओं के साथ–साथ कवि ने जमींदार गाँवो में किस प्रकार अत्याचार लोगों पर कर रहे थे इसका चिृण किया है । स्वयं कवि भी गरीबी और अभावों से ग्रस्त देश को देखता है तो चिंतीत हो उठता है । जमींदार किस प्रकार कानून का फायदा उठाकर किसानों का शोषण कर रहे है और गरीब जनता को उनके अधिकारों से दूर रख रहे हैं । इसका चित्र भी कवि ने कविता में खींचा है । स्वाधीनता के पश्चात लोगों को लगा देश में सुधार आयेगा । लेकिन यहाँ लोगों के साथ कवि का भी मोहभंग हुआ । जब कभी जनता स्थितियों से उबरने का प्रयास करती है तो सत्ताधारी व्यवस्था के लोग उसे दमनकारी नीति से दबा देते हैं । कवि को यह पता है कि देश की प्रगति के मार्ग में रोडा बननेवाली एकमात्र पूँजीवादी व्यवस्था है । वास्तव में यह वर्ग जनविरोधी और रुढीवादी है । यही इस देश का दुर्भाग्य है। यह लोग सफेद पोश धारण कर अपने चेहरे पर सद्चरित्र का मुखौटा लगाकर ईमानदार होने का ढोंग रचते हैं । इन लोगों का पर्दाफाश कवि ने इस प्रकार किया है–

''लाख–लाख श्रमिकों की गर्दन कौन रहा है रेत ?
छीन चुका है कौन करोडों खेतिहरों के खेत ?
किसके बल पर कूद रहे हैं सत्ताधारी प्रेत । ''[8]

नागार्जुन साम्यवाद के पुरस्कर्ता हैं । उसके प्रति उन्हें आकर्षण है, आस्था है । कवि समाज में स्थित वर्ग वैशम्य को देखकर चिढ जाता है । कारखानों, मीलों, और बडे–बढे उत्पादनों और साधनों पर कवि सभी को समान भागीदारी देना चाहता है । इस प्रकार जब मजदूरों की भागीदारी होगी तभी सही अर्थ में देश में समाजवादी व्यवस्था आ सकती है । पर इन साधनोंपर जमींदार और पूँजीपतियों का ही अधिकार है । इसी कारण देश में अमीर गरीब के बीच खाई बढती जा रही है । गरी–गरीब होता जा रहा है तो अमीर–अमीर होता जा रहा है । इस देश में आज भी टाटा, बिडला, अंबानी जैसे लोग रोज दिवाली मनाते है और गरीब जनता तीसों दीन होली मनाती है । इसका वास्तववादी चित्रण करते हुए कवि कहता है –

'' खादी ने मल–मल से सांठ–गांठ कर डाली है
बिडला–टाटा–डालमिया की तीसों दिन दिवाली है
जोर जुल्म की आँधी चलती बोल नहीं कुछ सकते है
समझा नही पाता हूँ कि हुकूमत गोरी है या काली है ।''[9]

इस प्रकार हम देखते हैं कि ऐसे एक नहीं अनेक उदाहरण नागार्जुन की कविताओं में प्राप्त होते है । कवि ने जहॉ कहीं भी सामाजिक अंतर्विरोधों कों देखा उसे सही रुप में चित्रित किया है । 'पैसा चहक रहा है' नामक कविता में कवि ने पूंजीवादी वर्ग के सुखी और अय्याशी जीवन का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया है । हमारे देश की विडम्बना है कि यहॉ एक ओर समाज का एक शोषित–पीडित और मजदूर वर्ग है जिसे दो जून (वक्त) की रोटी भी नसीब नहीं होती और दूसरी ओर वह वर्ग है जो अपनी झूठी शान पर बेहिसाब पैसा खर्च कर रहा है ।

नागार्जुन सही अर्थो में शोषित–पीडित जनता के कवि है । कवि ने हर स्थान पर देश के उपेक्षित वर्ग की सोचनीय स्थिती पर प्रकाश डाला है । कवि जीवन की इन स्थितियों से निराश नही हैं, बल्कि उन्हें ऐसा विश्वास है कि कभी न कभी इन विसंगतीपूर्ण स्थितियों से इस देश की आम जनता को छुटकारा मिलेगा । उन्हें अपने अधिकारों की प्राप्ति होगी । नागार्जुन पूर्णतः जनवादी कवि हैं । मनुष्य के उज्वल भविष्य की कामना उनके काव्य में सर्वत्र व्याप्त है । कवि वर्तमान जीवन की तमाम विषमताओं को मिटाकर एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहता है, जहॉ शोषण का नामोनिशान न हो और जहॉ के नेता सद्‌गुणों से युक्त हों । उनके समस्त काव्य का लक्ष्य ही यही है । नागार्जुन एक ऐसे कवि का नाम है जो वादों, प्रवादों से दूर है और जिसकी कविता में खेत–खलिहान, मजदूर–किसान सर्वत्र विराजमान है ।

संदर्भ :–

1.नरेंद्र सिंह–साठोत्त्री हिंदी कविता में जनवादी चेतना (पृ.सं. 52)
2.नागार्जुन–तुमने कहा था (पृ.सं. 47)
3.डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, समकालीन हिंदी कविता (पृ.सं. 65)
4.नागार्जुन–सतरंगे पंखो वाली (पृ.सं. 23)
5.उपरीवत (पृ.सं. 21)
6.नागार्जुन, तालाब की मछलियॉ (पृ.सं. 12)
7.नागार्जुन, युगधारा (पृ.सं. 87)
8.नागार्जुन, हजार–हजार बाहों वाली (पृ.सं. 122)
9.नागार्जुन, इस गुब्बारे की छाया में (पृ.सं. 62)

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

* International Scientific Journal Consortium Scientific
* OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net